नवाज़- ए- खुर्शीद

कुछ शायरीयों का गुलदस्ता

परवीन कौसर

www.sontatshree.in

सप्तर्षी प्रकाशन

नवाज़- ए- खुर्शीद

कुछ शायरीयों का गुलदस्ता

© परवीन कौसर

• **प्रकाशक**

सौ. कुमुदिनी सिद्धेश्वर घुले,

सप्तर्षी प्रकाशन,

(सप्तर्षी असोसिएट्स अण्ड पब्लिकेशन्स)

गट नं.८४/२, दामाजी कॉलेज पाठीमागे,

मंगळवेढा, जि.सोलापूर-४१३३०५

सय्यद शेख (व्यवस्थापक) मोबा.९८२२७०१६५७

email: saptarsheeprakashan@gmail.com

Website: www.saptarshee.in

www.amazon.in

• **मुखपृष्ठ** | किशोर घुले

• **मांडणी** । सय्यद शेख

• **डी टी पी** | कृतिका प्रिंटर्स, मंगळवेढा

• **प्रथमावृत्ती**

• **मुल्य | Rs.99.00**

www.saptarshee.in

प्रस्तावना...

हम को मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के ख़ुश रखने को 'ग़ालिब' ये ख़याल अच्छा है
....मिर्ज़ा ग़ालिब

शायरी एक ऐसा माध्यम है जो हम चाहे अपने दिल की बात बहुत आसानी से कह सकते है और सबसे अच्छी बात ये है की शायरी दो लाइन दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना रखा है । बेवजह की भावना को व्यक्त करने के लिए इश्क़ शायरी की एक सुंदर सूची है। इश्क शायरी शायरी में एक विशेष स्थान पाती है क्योंकि यह दिव्य प्रेम से संबंधित है। कई बार, जीवन हमें मायूसओं से छुटकारा पाने का मौका नहीं देता है। इसके बावजूद, जीवन आगे बढ़ता है और व्यक्ति मायूसओं के साथ जीना सीखता है। दिलचस्प बात यह है कि यह केवल मायूस है जो कभी-कभी इंसानों को इसके खिलाफ युद्ध छेड़ने और विजयी होने के लिए प्रेरित करती है। ये शायराना छंद जीवन में सफलता और असफलता के विभिन्न पहलुओं की सराहना करते है। परवीन कौसरजी का यह एक प्रयास शायरीयों के शौकिनों को कुछ शायरीयों का गुलदस्ता पेश करने का।

प्रकाशक

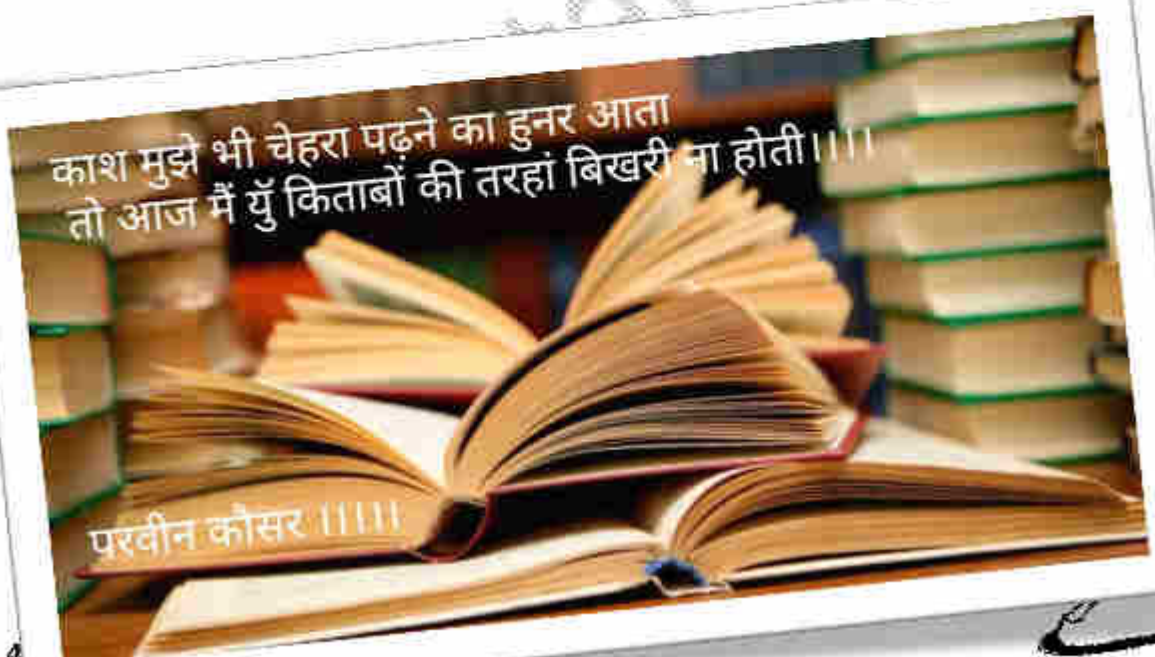

arshee.in

कितनी मन्नतो के बाद
मिलें हों
जरा ख़ैरियत तो पुछ लो।
मेरी न सही अपनें दिल
की तसल्ली तो कर
लो।।।।
परवीन कौसर ।।।।।

जख्मो को सीने में
खाक कर दिया ।।
ऑसूओं को ऑखों की
दहलीज को पार करने
न दिया ।।।
परवीन कौसर ।।।।।

झिझक़ कैसीं
पराईं तों नहीं मैं
बस एक आवाज दें देंतें
जैसीं हूं वैसीं हीं दौड़ी चली
आतीं,,,,,,

©® परवीन कौसर,,,

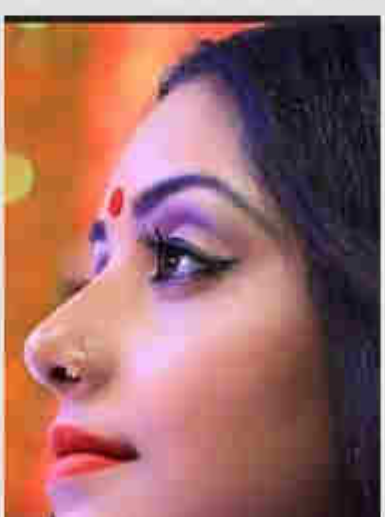

शिक़ायत करुं इतनीं तों काबिल नहीं
हां रुठ जाऊंगीं
मनानें कें बहांनें हीं सहीं
रु ब रु हों जाओगें

©® परवीन कौसर,,,,,

इत्तेफ़ाक तों नहीं है
मिलना हमारा
युंहीं नहीं हर रोज़
फुलों कों क़िताब में
छिपाएं रखां करतीं थीं।

©® परवीन कौसर,,,,,

क्युं करूं तुझ पर ऐतबार
क्युं करूं तुझ पर ये एहसान
जब कि तु तों हैं बेवफ़ा
तों क्युं करूं मेरीं वफ़ा को तुझ पर
कुर्बान

©® परवीन कौसर,,,,

शिकायत तों अब उन लम्हों सें हैं
साथ बिताएं हुये उन हसीन पलों से हैं
साथ निभाना न था तों क्यों उस
पल कों यादगार लम्हा बना दिया
और वों लम्हें अब गहरें जख्म किं
तरहां हर पल दर्द देतें है।

©® परवीन कौसर****

** गहरें जख्म या गहरा ऐहसास
थोड़ी सी रुसवाई
और जानलेवा आजमाईश
कुछ ग़लत फहमीं
और यें लम्बी जुदाई

©® परवीन कौसर:::::

ये तेरी फिक्र हीं तो हैं जो मुझे
तुमसे जुदा होनें नहीं देतीं
....
और वो तेरी बेवफ़ाई हैं जो
मुझे तुमसे वफ़ा करनें मजबूर
कर देती हैं।।।

©® परवीन कौसर....

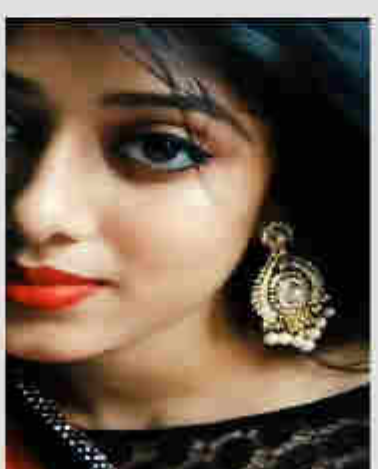

भरीं महफ़िल में उनका युं मुस्करा कर देखना
मुझे आईनां देखनें मजबूर कर दिया***

*©® परवीन कौसर.....

खामोशी को मेरे पढ़
लिया होता तो शायद
मेरे दर्द का एहसास
होता ।।।।

परवीन कौसर ।।।।

ना हम कुछ कह पाये
ना तुम समझ पाये
दिल की बात दिल में रही
मेरी मुहब्बत अधूरी रह गई
Parveen Kausar

www.saptarshee.in

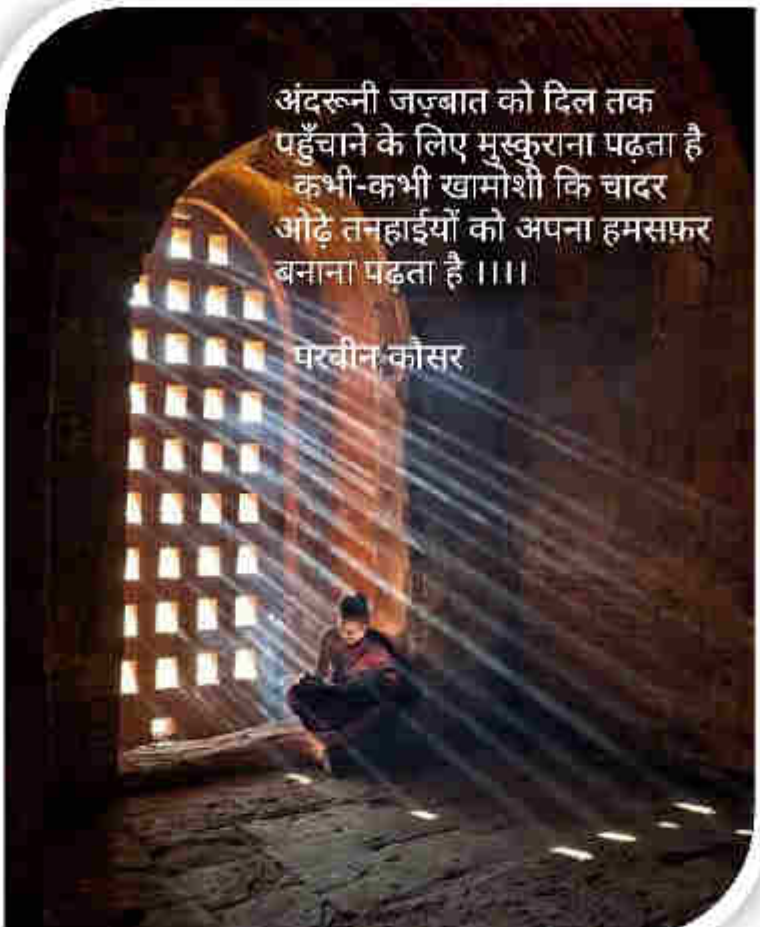
अंदरूनी जज़्बात को दिल तक
पहुँचाने के लिए मुस्कुराना पढ़ता है
कभी-कभी खामोशी कि चादर
ओढ़े तनहाईयों को अपना हमसफ़र
बनाना पढ़ता है ।।।।
परवीन कौसर

तनहाईयों में याद कर लेने की इजाज़त
तो दे दो।
रात के अंधेरे में आँसु गिराने की
इजाज़त तो दे दो।।।।
परवीन कौसर

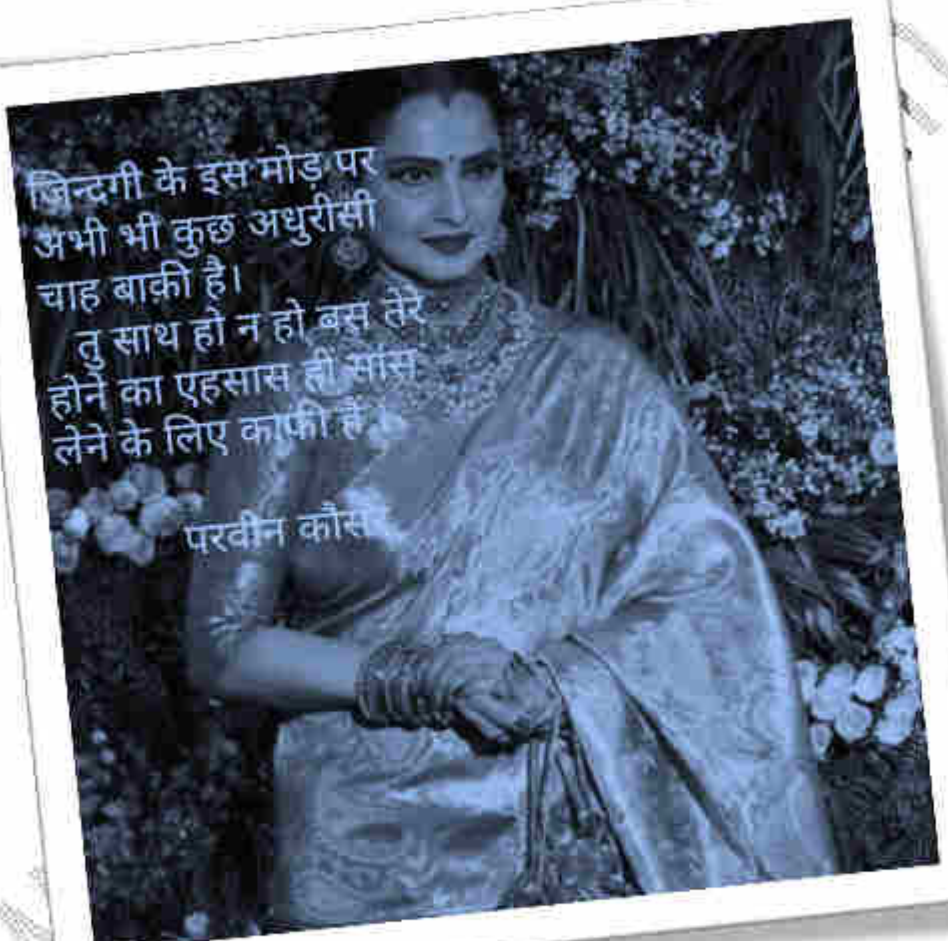
जिन्दगी के इस मोड़ पर
अभी भी कुछ अधुरीसी
चाह बाक़ी है।
तु साथ हो न हो बस तेरे
होने का एहसास ही सांस
लेने के लिए काफ़ी है
परवीन कौस